तू खुद को बदल, तू खुद को बदल, तब ही तो ज़माना बदलेगा

कमला भसीन

हमें बार-बार, चारों तरफ़ से यह सुनाई पड़ता है कि औरत की हालत और उसका दर्जा सुधारने की ज़रूरत है। यह करने के लिये हमें सामाजिक रीति-रिवाज बदलने हैं, शायद धार्मिक सोच भी बदलनी हो। लोगों के सोचने के तरीक़े, उनका रवैया और व्यवहार भी बदलना है।

जब भी बदलाव लाने की जरूरत पर बात होती है तो बहुत-सी औरतें बड़ी ईमानदारी से यह कहती हैं "पर इस तरह के बड़े बदलाव के लिये हम साधारण औरतें भला क्या कर सकती हैं? यह काम तो नेताओं या हुकमरानों के करने के हैं।"

यह विचार मन में आना स्वाभाविक है क्योंकि ज़्यादातर बातें नेताओं की ही होती हैं। इतिहास में भी आम लोगों का ज़िक्र नहीं होता। सिर्फ़ राजा-महाराजाओं, बादशाहों, मन्त्रियों, बड़े नेताओं, विद्वानों, वैज्ञानिकों, सेनापतियों का ही ज़िक्र होता है। इतिहास पढ़ कर तो यह लगता है कि साधारण लोग शायद हुआ ही नहीं करते थे। बड़े-बड़े किले बादशाह खुद ही बना लेते थे। खेती-बाड़ी, मज़दूरी करके हुकमरान खुद ही खज़ाने भर लेते थे या इन सब की बीबियां और वे खुद, अपने हाथों से दस्तकारी कर के खूबसूरत कपड़े, ज़ेवर आदि पहनते थे। साधारण लोगों के काम, उनके योगदान को हमेशा से ही नकारा गया है क्योंकि इतिहास लिखने वाले पढ़े-लिखें और अमीर तबके से थे। सो उन्होंने अपने ही तबके की तूती बजाई। और इतिहास लिखने वाले सभी पुरुष थे, सो औरतों का तो बिल्कुल भी ज़िक्र नहीं है। अगर ग़लती से कहीं किसान, मज़दूर या सिपाही की बात है भी इतिहास में, तो वह मर्दों की बात है।

जड़ों की मज़बूती पर ही पेड़ की मज़बूती निर्भर होती है। जितनी गहरी जड़े होती हैं उतना ही ऊंचा पेड़ उठ सकता है। छोटी जड़ों वाले पेड़ भी छोटे होते हैं।

साधारण लोगों का महत्व

साधारण लोग ही असाधारण काम कर सकते हैं। हमें इतिहास और पूरे समाज के इस रवैये को ठीक से पहचान कर इसे नकारना है। हमें यह समझना है कि ***साधारण लोगों के बिना असाधारण काम हो ही नहीं सकते। क्या करोड़ों स्त्रियों और पुरुषों की शक्ति और सहयोग के बिना महात्मा गांधी अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंग छेड़ सकते थे?*** आज प्रजातंत्र में तो ख़ासतौर से आम लोगों का बहुत बड़ा किरदार है। आम, साधारण स्त्री-पुरुष ही देश की जड़ें हैं, देश उन्हीं से खड़ा है। जड़ों की मज़बूती पर ही पेड़ की मज़बूती निर्भर होती है। जितनी गहरी जड़ें होती हैं उतना ही ऊंचा पेड़ उठ सकता है। छोटी जड़ों वाले पेड़ भी छोटे होते हैं।

वही बदलाव सही और टिकाऊ हो सकते हैं जिनमें समाज के आम लोगों की पूरी भागीदारी हो, जिन्हें आम लोग सही समझें और अपनायें।

ऊपर से थोपे हुये बदलाव कभी रंग नहीं लाते।

इसलिये अगर हम औरतों की स्थिति और स्त्री-पुरुष संबंधों को बदलना चाहते हैं तो हमें शुरुआत खुद से, अपने आप से करनी होगी। कहावत है कि बिना मरे स्वर्ग नहीं मिलता। ठीक इसी तरह बिना करे समाज नहीं बदलता। आप और मैं ही तो समाज हैं। कोई बाहर का तो नहीं है। हम सब समाज हैं, बदलना हम सब को है। औरों के बदलने का इंतज़ार करते रहे तो कुछ शुरू नहीं होगा। अगर हम सब यह कहें "कोई और शुरुआत करें न करें—मैं कर रही हूं," तो शुरुआत हो ही जायेगी।

औरतें अपनी इज्ज़त करें

पुरुष प्रधान समाज ने तो औरतों को दूसरे दर्जे का, कमतर व्यक्ति माना ही है पर हम औरतों ने भी काफी हद तक अपने आप को नीचा समझ लिया है। इसलिये बदलाव का पहला क़दम है हम अपने इस कमतरी के अहसास से छुटकारा पायें। जब हम अपनी इज्ज़त खुद करेंगे तभी दूसरे हमारी इज्ज़त करेंगे। जब हम अपने को एक पूरा इंसान, एक कर्मठ, जुझारू, मेहनती इंसान का दर्जा देंगे तभी दूसरे हमें यह दर्जा देंगे। इसीलिये तो कहा है—

तू खुद को बदल, तू खुद को बदल
तब ही तो ज़माना बदलेगा
तू चुप रह कर जो सहती रही
तो क्या ये ज़माना बदलेगा
तू बोलेगी, मुंह खोलेगी
तब ही तो ज़माना बदलेगा।

अपनी इज्ज़त करने के साथ-साथ हम अपना ध्यान भी रखें। अपने को भी स्वस्थ और खुश

जब हम अपनी इज्ज़त खुद करेंगे तभी
दूसरे हमारी इज्ज़त करेंगे...
हमें ज्ञान और शिक्षा की रोशनी
से खुद को जगमगाना होगा।
ज्ञान के ज़रिये अपना मान
बढ़ाना होगा।

•

रखें। खुद को मिटाकर औरों को खुश रखना मुश्किल है। और ऐसी खुशी सच्ची खुशी है भी नहीं। अगर एक मिट जाये, दुखी रहे और दूसरा खुश हो तो हासिल कुछ नहीं होता। एक का दुख, दूसरे की खुशी को नकार देता है। हासिल होता है शून्य। अगर दोनों खुश हों तभी जोड़ आगे बढ़ता है। अगर दूसरे लोग औरत की खुशी की परवाह नहीं करते तो हमें खुद अपनी खुशी की परवाह करनी होगी।

सशक्त बनें

सशक्त या ताक़तवर बनने के लिये हमें ज्ञान और शिक्षा का सहारा लेना होगा। अपने मस्तिष्क को उजागर करना होगा। ज्ञान की रोशनी से खुद को जगमगाना होगा। यह ठीक नहीं है कि घर के दूसरे सितारे चमकते रहें और हम पर हमेशा बादल ही छाए रहें। कभी बीमारी के, तो कभी दुख, ग्लानि और थकान के और कभी अज्ञान के। जब, जहां, जैसा मौका लगे हमें अपना ज्ञान बढ़ाना होगा, और ज्ञान के ज़रिए अपना मान बढ़ाना होगा, अपना स्थान बनाना होगा।

बूंद-बूंद से सागर

अगला क़दम भी हम परिवार के अंदर ही उठा सकते हैं। परिवार में हम अन्याय न होने दें। अगर परिवार में हमारे साथ, हमारी बेटियों के साथ, देवरानियों, जेठानिओं, सास, ननद के साथ अन्याय होता है तो हम उसे समझें और उसे रोकने की कोशिश करें। अगर हम खुद अपने बेटे और बेटी में भेद करते हैं तो उसे रोकें। कम से कम अपनी बेटी के तो साथी बनें।

शक्ति और पहचान बढ़ाने का एक सस्ता व सरल तरीक़ा यह है कि हम ***अपने जैसे लोगों के साथी बन जायें। एक और एक ग्यारह हो जायें।*** छोटी-सी बूंद अगर अकेली रहेगी तो ज़रा-सी गर्मी से भस्म हो जायेगी, भाप बन कर मिट जायेगी, अपना अस्तित्व गंवा देगी। यदि वह और बूंदों के साथ एक हो जाये तो वह बूंद से पोखर, तालाब, नदी, समुद्र कुछ भी बन सकती है। बूंदें ही तो मिल कर समुद्र-सी महान बनती हैं। पर बड़ा, सशक्त बनने के लिये अपने अहम और स्वार्थ को, अपनी पहचान को भी मिटाना पड़ता है।

अभी हाल ही में आंध्र प्रदेश की ग़रीब, साधारण औरतों ने एक असाधारण आंदोलन चलाया शराब के खिलाफ़। बूंद, बूंद से मिल कर वे एक ऐसा समुद्र बनीं कि उस के सामने शराब के ठेके, ठेकेदार, उनके समर्थक पुलिस वाले और नेता सब बह गये। अकेली औरत भला ये सब कर सकती थी? और जब वो सब मिल कर एक हो गईं तो भला उन्हें कोई रोक सकता था?

इसी तरह अगर हम अपने परिवार या गांव में न्याय की किसी भी लड़ाई के लिये एक हो जायें तो जीत हमारी ज़रूर होगी। लेकिन लड़ाई न्याय और सच्चाई के लिये होनी चाहिये।

संगठन बनायें, सतसंग करें

संगठन बनाये बिना ज़्यादा हासिल करना मुश्किल है। और संगठन बनाना मुश्किल नहीं है। औरों के संग हो जायें, संगठन बन जायेगा। औरों से संगम कर लें। अच्छा मिलन, आगे बढ़ने के लिये मिलन, बड़ा बनने के लिये मिलन ही संगम है। दो छोटी नदियां एक दूजे में समाती हैं तो पल भर में दोनों दोगुनी हो जाती हैं और जब अलग

होती हैं तो दोनों आधी रह जाती हैं। तो हमें संग होना है उन सभी औरतों के (और पुरुषों के भी) जिनके साथ अन्याय हो रहा है, या जो कमज़ोर हैं।

सत्य और न्याय के लिये मिलना, मिल कर सोचना ही सतसंग है। सतसंग का मतलब इकट्ठे बैठकर भजन करना ही नहीं होता। सतसंग परलोक के लिये ही नहीं होते। असली सतसंग इस लोक को सुधारने के लिये होते हैं या होने चाहियें।

महिला समूह या स्त्री-पुरुषों के संगठन जो इकट्ठे बैठकर, सत्य और न्याय पर चर्चा करते हैं, सत्य और न्याय के लिये संघर्ष करते हैं, वे भी सतसंगी हैं। नरक में बैठकर स्वर्ग के सपने लेकर, आंखे बंद कर के भजन करना असली सतसंग नहीं है।

असली सतसंग है परिवार, गांव, समाज को बदलने के लिये सतसंग। इसी प्रकार के सतसंग से औरतों ने अपने हालात बदले हैं। कहीं पर पंप ठीक करना सीख कर, गांव को पानी दिलवाया। कहीं संघर्ष कर के जंगल का कटना रुकवाया। कहीं संगठन बना कर नये जंगल लगाये। कहीं पंचायत का मेम्बर बन के स्कूल चलवाए, गांव के लिये शौचालय बनवाये। कहीं बचत योजना चला कर बनिये से पीछा छुड़ाया। ऐसे सतसंग हैं अपने को बदलने के लिये, आस-पड़ौस, गांव, शहर को बदलने के लिये। मिलकर आगे बढ़ने के लिये, दीप जलाने के लिये।

हम साधारण औरतें ये सब कर सकती हैं बिना किसी की इजाज़त के, बिना किसी का रास्ता देखे। तो आओ चलना शुरू करें, संगम करें, सतसंग करें, खुद चमकें, दूसरो को चमकायें। □